www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या RTK/010/2017-19
सृष्टि संवत् 1960853117
विक्रम संवत् 2073
दयानन्दाब्द 193

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : आचार्य योगेन्द्र आर्य
वर्ष : 13 अंक : 31 रोहतक, 14 जनवरी 2017 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

!!ओ३म्!!

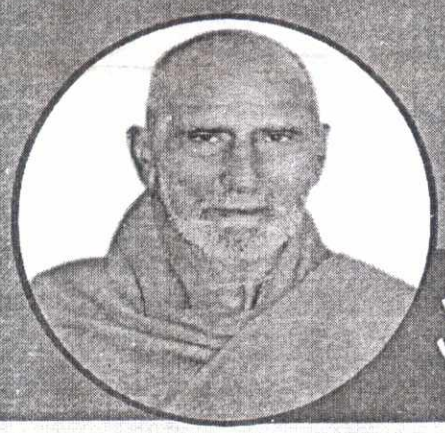

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

के तत्त्वावधान में आयोजित

स्वामी दयानन्द सरस्वती

आचार्य बलदेव स्मृति दिवस

स्थान - दयानन्द मठ रोहतक समय - प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक

दिनांक - 28 जनवरी 2017

आमन्त्रित अतिथिगण

स्वामी धर्मानन्द - उड़ीसा
स्वामी प्रणवानन्द - गौतम नगर दिल्ली
स्वामी धर्मदेव - पिल्लूखेड़ा जीन्द
स्वामी धर्ममुनि - बहादुरगढ़
स्वामी विदेहयोगी - कुरुक्षेत्र
स्वामी सोमानन्द - अजमेर
स्वामी विजयवेश - गुड़गांव
स्वामी सुखानन्द - फतुही राजस्थान
आचार्य हरिदत्त - लाढ़ौत रोहतक
आचार्य अखिलेश्वर - दिल्ली
आचार्य ऋषिपाल - फरीदाबाद
आचार्य सनत् कुमार - पंचकुला
आचार्य सोमदेव - ऋषि उद्यान अजमेर
आचार्या दर्शना - गु० खरल जीन्द
आचार्या सन्तोष - गु० एंचरा जीन्द
आचार्या अमरकौर - गु० पाढ़ा करनाल
आचार्या श्रुतिकृति वेदरत्न - गु० पंचगांव
आचार्या विद्यावती - गु० लोवाकलां
आचार्या मधुरलता मान - गु० मोर माजरा

आचार्य देवव्रत - महामहिम राज्यपाल हि.प्र.
चौ० बीरेन्द्र सिंह - इस्पात मंत्री भारत सरकार
श्री सुरेशचन्द आर्य - प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
श्री प्रकाश आर्य - मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
कैप्टन अभिमन्यु - वित्तमंत्री हरियाणा सरकार
श्री ओमप्रकाश धनखड़ - कृषिमंत्री हरियाणा सरकार
श्री मनीष ग्रोवर - सहकारिता मंत्री हरियाणा सरकार
डा० सुरेन्द्र - कार्यकारी प्रधान, परोपकारिणी सभा अजमेर
श्री ओममुनि - मंत्री, परोपकारिणी सभा अजमेर
श्री धर्मपाल आर्य - प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली
श्री विनय आर्य - मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली
डा० विजेन्द्र सिंह पूनिया - कुलपति एमडीयू रोहतक
डा० राजेन्द्र विद्यालंकार - कुरुक्षेत्र
डा० धर्मदेव विद्यार्थी - क्षेत्रिय निदेशक, डी ए वी जीन्द जोन
डा० सुरेन्द्र - अध्यक्ष, संस्कृत विभाग एमडीयू रोहतक
डा० प्रमोद आचार्य - हिसार
आचार्य कर्मवीर - ऋषि उद्यान अजमेर
आचार्य वेदनिष्ठ - गु० जुआं सोनीपत
आचार्य वाचोनिधि - कच्छ, गुजरात
आचार्य सन्दीप - सोनीपत

आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ रोहतक
9416874035, 9911197073, 9728333888, 9416503513, 9813235339, 9416019506, 8199938001, 8199982222

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय....

समग्र दयानन्द दर्शन

❑ आचार्य योगेन्द्र आर्य, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

देव दयानन्द जी महाराज हजारों वर्षों से विलुप्त हुई ऋषि परम्परा के उज्ज्वल दीपक थे। आधुनिक विश्व के प्रथम ऋषि कहना उनको अनुचित न होगा। महाभारत काल के बाद कोई ऋषि पैदा हुआ होगा ऐसा प्रतीत नहीं होता। वैसे तो भारतभूमि अत्यन्त ही उर्वरा भूमि है। इस कालखण्ड में अनेक महान् व्यक्तित्व उत्पन्न हुए जिन्होंने अपने बौद्धिक, शारीरिक एवं चारित्रिक बल से विश्व को न केवल शासित किया अपितु एक श्रेष्ठ जीवन शैली की परम्परा का निर्वहन करते-करते मनुष्यों को लौकिक एवं पारलौकिक सुख का रास्ता बताया और समस्त विश्व का मार्गदर्शन किया। वह भारतभूमि ही है जहाँ पर परमपिता परमेश्वर ने मानव सृष्टि की रचना की। सभ्यता, संस्कृति का उद्गम स्थल यह भारत भूमि ही है, जहाँ पर कोटि-कोटि ऋषि पैदा हुए जिन्होंने मानव सभ्यता को उस परमपिता की वेदवाणी का सन्देश सुनाया परन्तु एक समय ऐसा भी आया जो न केवल हमारे लिए वरन् समस्त विश्व के लिए अत्यन्त दु:खदायी सिद्ध हुआ। महाभारत का युद्ध इतना विनाशकारी था कि जो संस्कृति, जो सभ्यता अपने चरम पर थी वह एक समय धूल में मिल गई। हमारा सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान धीरे-धीरे नष्ट होता चला गया। जिस संस्कृति ने करोड़ों वर्षों तक सम्पूर्ण विश्व को शासित किया वह एक दिन विलुप्त-प्राय हो गई। यह भारत भूमि जो समस्त विश्व की मार्गदर्शक थी वह विधर्मियों की गुलाम हो गई क्योंकि हमारे मार्गदर्शक ऋषि थे जो हमें नित नये ज्ञान-विज्ञान प्रदान करते थे परन्तु यह ईश्वरीय नियम है कि वह अपनी वाणी की रक्षा करता है। अनेक जन्मों के पुण्य प्रताप से उस परमपिता ने ऐसी दिव्यात्मा को जन्म दिया जो ईश्वरीय वाणी की उद्धारक बनी। वे ऋषि दयानन्द, जिन्होंने वेदों का पुनरुद्धार किया, जिन्होंने वेद की मान्यताओं, वेद के सिद्धान्तों को पुनर्स्थापित किया। वे ऋषि दयानन्द ही थे जिन्होंने सम्पूर्ण वैदिक क्रान्ति का आगाज किया।

ऋषि दयानन्द मूल रूप से विशुद्ध आध्यात्मिक विचारक होते हुए बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ते हुए अप्रतिम प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने न केवल परमपद प्राप्त किया अपितु मानव तथा राष्ट्र के चतुर्दिक उन्नयन हेतु मन, वचन, कर्म से अथक प्रयास किया। मानव जीवन का कोई एक भी पहलू अछूता दिखाई नहीं देता जिसे ऋषि ने न छुआ हो। उन्होंने न केवल जाति, धर्म एवं राष्ट्र के लिए ही चिन्तन किया अपितु समस्त मानव जाति के कल्याण की बात कही। इसी कारण एक धार्मिक आध्यात्मिक दयानन्द और राष्ट्रवादी में अन्तर कर पाना दु:साध्य प्रतीत होता है। सार्वजनिक जीवन में प्रविष्ट होने पर एक राष्ट्रवादी होते हुए एक सच्चे आध्यात्मिक पुरुष थे। उनकी सत्य की उपासना ही सच्ची उपासना थी। वे सत्य के प्रति कितने आग्रही थे कि आर्यसमाज के नियम बनाते वक्त हर उपयुक्त जगह सत्य का प्रयोग करते दिखाई दिये। धर्म के मिथ्या आडम्बरों पर आक्रोश भरी उनकी कठोरता यथार्थ को उद्घाटित करने वाली सधी एवं सीधी शैली है। धार्मिक, आध्यात्मिक एवं राष्ट्रवादी विचारों की पूर्णता में लीन ऋषि ने तात्कालिक दुर्व्यवस्था एवं भारतीय संस्कृति की अधोगति को समाप्त करने के लिए भावावेग पूर्ण वाग्मिता तथा निर्भीकता से साहित्य सृजन एवं लेखन तथा मौखिक प्रवचन किये। वह उनके उज्ज्वल चरित्र एवं अद्वितीय व्यक्तित्व का प्रतीक है। राजनीतिक परिधि से सम्पूर्ण रूप से, सर्वथा असम्पृक्त रहते हुए राजनीति के क्षेत्र में प्रभूत अवदान दयानन्द जैसे सन्त की सर्वप्रमुख विशेषता है।

ऋषि के राजतन्त्र का आधार वेद एवं तदनुरूप आर्षग्रन्थ है। राजनीतिक दर्शन के लिए वे मनु महाराज को ज्यादा मान्यता देते हैं। अपने क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में राजनीति पर ही एक समुल्लास लिख देते हैं। सत्य यह है कि महर्षि दयानन्द की युग चेतना वर्तमान युग से भिन्न थी, परन्तु उनके राजनीतिक दर्शन में अनेक ऐसे शाश्वत तत्त्व निहित हैं और सार्वभौमिक, सार्वकालिक है जो वर्तमान युग में भी सर्वथा उपयुक्त एवं अनुपालनीय हैं।

ऋषि के कथन की स्पष्टता उनके जीवन की स्पष्टता का प्रतिफल है। उन्होंने अपनी प्रत्युत्पन्न मति एवं वर्षों की कठोर साधना से अर्जित ज्ञान से अपने विचारों के सत्यापन हेतु वेदादि आर्षग्रन्थों को आधार बनाया। यही कारण है कि ऋषि ने राज्य की उत्पत्ति, विकास, प्रकृति, कार्य, न्याय, अर्थ, राष्ट्ररक्षा के विषय के पक्ष-पोषण में हर जगह वेदादि आर्षग्रन्थों का प्रमाण एवं भारत के गौरवपूर्ण प्राचीन इतिहास का उद्धरण दिया है। वेदादि सत्य शास्त्रों में उपलब्ध ज्ञान के आधार पर ही उन्होंने अपने समस्त विचारों को श्रेणीबद्ध किया है।

दयानन्द ने एक तरफ आध्यात्मिक जीवन में प्रगति के लिए जहाँ व्यक्तिगत व्यवहार की शुद्धता पर बल दिया वहीं राजनैतिक जीवन में भी उच्च नैतिक मूल्यों को आवश्यक बताया। दयानन्द दर्शन व्यक्तिगत व्यवहार शुद्धि एवं उच्च नैतिक मूल्यों के बिना राजनैतिक जीवन की कल्पना भी नहीं करता।

ऋषि विश्व में छल-कपट, धोखाधड़ी, अवसरवादिता, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, युद्धोन्माद, शोषण एवं हिंसा के फैलने का मूल कारण राजनैतिक जीवन में व्यवहार शुद्धि एव नैतिक मूल्यों की कमी को मानते हैं। उनका यह ध्रुव विश्वास था कि धर्म नीति से पृथक् होकर राजनीति सर्वथा स्वार्थ एवं कपट नीति बन जाती है। अपने इसी विश्वास के फलस्वरूप दयानन्द ने राजनीति को वेदसम्मत स्वीकार करते हुए राज्य संचालन का आधार धर्म को माना है जिससे समस्त मानव जाति के प्रत्येक लौकिक एवं पारलौकिक प्रयोजनों की पूर्ति सम्भव हो। यही कारण है कि उन्होंने 'राज' शब्द के साथ नीति के स्थान पर 'धर्म' शब्द को प्रयुक्त किया। ऋषि ने 'धर्म' शब्द का प्रयोग धारण करने तथा अभ्युदय एवं नि:श्रेयस की सिद्धि के अर्थ में किया है। किसी सम्प्रदाय विशेष के अर्थ में नहीं। जिस कारण आत्मा के अभाव में शरीर संज्ञा शून्य होकर नष्ट हो जाता है उसी प्रकार धर्म शून्य राजनीति भी देश व राष्ट्र को नष्ट कर देती है। इसलिए ऋषि ने धर्मानुसार 'राजनीति को स्वीकृति प्रदान की है जिससे प्रत्येक मनुष्य का प्रयोजन पूरा हो सके। प्रत्येक मानव के लिए उसकी उन्नति, प्रगति के समान अवसर प्राप्त हो यही उनका मानवता वादी विचार है। धर्मपूर्वक व्यवहार प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। उनके अनुसार मनुष्य उसको कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दु:ख और हानि-लाभ को समझे। इसमें उसको कितना ही दारुण दु:ख प्राप्त क्यों न हो, चाहे प्राण भी भले ही चले जावें, परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक् कभी न होवें।' उनके मानवतावाद में स्वार्थवाद की गन्ध तक नहीं है। उनके मानवतावाद के सर्वोत्तम स्वरूप का नाम ही राष्ट्रवाद है। उन का वेद-प्रतिपादित वैज्ञानिक मानवतावाद अर्थनीति, धर्मनीति, विदेश नीति, राजनीति और समाजनीति में सर्वत्र व्याप्त है। उनका दर्शन ऐसे समाज की रचना का दर्शन है जिसमें आर्थिक न्याय, प्रत्येक स्त्री-पुरुष को स्वतन्त्रता और अवसर की समानता, उच्च नैतिक मूल्यों का विकास, आध्यात्मिक वैदिक जीवन मूल्यों की स्थापना, सहयोग सद्भाव, विश्वबन्धुता की कामना और सत्कर्म करते हुए नि:श्रेयस की अभिलाषा निहित हो। दयानन्द की ऐतिहासिक पद्धति हमारी संस्कृति, सभ्यता, धर्म एवं दर्शन के उच्चादर्शों के आधार पर भविष्य के प्रति सचेष्ट एवं सजग करते हुए राष्ट्ररक्षा एवं विकास का मार्ग प्रशस्त करते हुए उच्च आध्यात्मिक चेतना प्राप्ति का मार्गदर्शन करती है।

ऋषिवर देवदयानन्द के प्राणिमात्र के लिए कल्याकारी विचारों को प्रति व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए सभा कृतसंकल्प है। इस कार्य के लिए आप सभी महानुभावों से सभा सहायता की अपेक्षा करती है कि ऋषिवर के विचारों और उनके द्वारा स्थापित उच्च जीवनमूल्यों को अपने जीवन में धारण करते हुए परम कल्याणकारी वेदमाता के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने में सहायता करें। परमपिता परमात्मा हमारा मार्ग प्रशस्त करेंगे।

www.thearyasamaj.org

स्वतन्त्रता के महान् योद्धा : नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

संसार में कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जो साधना के पथ पर चलकर अपने जीवन को सार्थक करते हैं। कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जो पीड़ितों की सेवा करने में अपने जीवन को धन्य मानते हैं। कुछ महापुरुषों में नेतृत्व के गुण बचपन से होते हैं, कुछ महापुरुष राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने आपको आहुत कर जाते हैं, परन्तु कुछ ही महापुरुष ऐसे होते हैं, जो साधना के पथ पर चलते हुए, पीड़ितों की सेवा करते हुए, बचपन से ही नेतृत्व के गुणों से ओतप्रोत होते हुए, राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने आपको आहुत करने में गौरवान्वित अनुभव करते हैं, उनमें से एक महापुरुष का नाम था श्री सुभाषचन्द्र बोस । संभवत: **'नेताजी'** केवल और केवल इस महापुरुष के नाम के साथ ही जुड़ा है, अन्य किसी के साथ नहीं।

जन्मस्थान एवं माता-पिता-उड़ीसा का कटक शहर और उसका ग्राम कोडेलिया वह सौभाग्यशाली ग्राम है जिस ग्राम में एक ऐसे रत्न का जन्म हुआ जिसे लोग प्यार से सुभाष-दा कहते हैं। वह माँ श्रीमती प्रभावती एवं वह पिता श्री जानकीनाथ बोस सौभाग्यशाली हैं, जिनके घर में 23 जनवरी 1897 को इस महामानव सुभाष जी ने जन्म लिया।

अंग्रेज स्वार्थी एवं विश्वास-घाती हैं-एक सात-आठ वर्ष का बच्चा गम्भीर मुख की आकृति बनाकर बैठा है। बच्चे इस आयु में चंचल होते हैं, परन्तु यह बच्चा अपने मुख की गम्भीर आकृति बनाकर बैठा है। उसकी बालसखी कमला उस बच्चे को दूसरे खेलने वाले बच्चों के साथ खेलने के लिए कहती है परन्तु वह बच्चा उन बच्चों के साथ खेलने से मना करता है। परन्तु बाल सखी के बार-बार आग्रह करने पर वह बच्चा कहता है—"मुझे इन अहंकारी बच्चों के साथ खेलना अच्छा नहीं लगता। यह अंग्रेजों के बच्चे आततायियों की संतानें हैं।" वह अंग्रेज बच्चे इस बच्चे से उनके साथ न खेलने का कारण पूछते हैं तो वह उत्तर देता है—"अंग्रेज स्वार्थी और विश्वासघाती हैं। मैं तुम जैसे स्वार्थी और विश्वासघाती पिताओं के पुत्रों के साथ खेलना अच्छा नहीं समझता। वह बच्चा कहता है कि इन अंग्रेजों के साथ खेलने की बात तो छोड़ो, मैं इनके साथ बात करना भी पसंद नहीं करता।" तब बाल सखी कहती है कि मैं भी अंग्रेजों के साथ खेलना पसन्द नहीं करती क्योंकि यह हम भारतीयों को हीन दृष्टि से देखते हैं। तब वह बच्चा उस बाल सखी कमला से कहता है—"मैं तुम्हें अपनी फौज में भर्ती करूँगा।" बाल सखी ने पूछा—"तुम फौज किसलिए बनाओगे?" उस बच्चे ने उत्तर दिया—"अंग्रेजों को इस देश से खदेड़ने के लिए, फौज आवश्यक है, मैं इसलिए अपनी एक फौज बनाऊँगा।" इतने देर में उस बच्चे की माँ वहाँ आ गई। वह बाल सखी कमला उस बच्चे की माँ से बोली—"मौसी जी! देखो, यह आपका पुत्र फौज बनाने की बात कर रहा है। बड़ी-बड़ी बातें करने लगा है।" माता श्रीमती प्रभावती ने पूछा—"सुभाष! यह बड़ी-बड़ी बातें तुम्हें कौन सिखा रहा है?" उस बच्चे ने कहा—"माँ! यह सब आपका आशीर्वाद है। माँ उसकी बात सुनकर मुस्कुरा देती है।" यह बच्चा और कोई नहीं, स्वतंत्रता सेनानी सुभाषचन्द्र बोस ही था जिसने बचपन से ही अन्यायी, अंग्रेजों को भारत की धरती से खदेड़ने के लिए फौज बनाने की तैयारी कर रहा है। तभी तो कहा है—"होनहार बिरवान के होत चिकने पात।" महापुरुषों के गुण पालने में ही दिखने लग जाते हैं। इन दोनों वाक्यों को इस राष्ट्र के महान सपूत सुभाष जी ने सिद्ध कर दिखाया।

अंग्रेज चाहे शिक्षक ही क्यों न हो, थप्पड़ मार दिया-अंग्रेजी प्रोफेसर ओटंग कक्षा में पढ़ा रहे थे। उन्होंने किसी भारतीय छात्र से एक प्रश्न का उत्तर पूछा। छात्र तुरन्त उत्तर न दे सका। तब अंग्रेज प्रोफेसर ने उस भारतीय छात्र से कहा—"यू ब्लैक डाग, क्या खाक पढ़ता है? (तुम काले कुत्ते, क्या खाक पढ़ते हो?)।" वह भारतीय विद्यार्थी सहम गया। सुभाष विद्युत् गति से एकदम बोला—कन्ट्रोल यूअर टन्ग, सर। (श्रीमान् जी, कृपया अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखिये)। प्रोफेसर चीखा—यू सिट डाउन (तुम बैठ जाओ)। सुभाष ने तेज स्वर में कहा—आपने इस भारतीय छात्र को ब्लैग डाग (काला कुत्ता) क्यों कहा? प्रोफेसर आगबबूला हो उठा और बोला—'टुम बीच में क्यों बोलता है? डैम ब्लाडी... ?' बस अंग्रेज प्रोफेसर ओटंग का इतना ही कहना था कि सुभाष ने आव देखा न ताव। सुभाष तड़प उठे और भारतीयों का इतना अपमान उसे सहन नहीं हुआ और झपटकर प्रोफेसर के गले पर भरपूर थप्पड़ जड़ दिया। कक्षा में गहरा सन्नाटा छा गया। वह प्रोफेसर तो गाल सहलाता रहा। सुभाष ने न केवल उस अंग्रेज को पीटा भी तथा विद्यालय में हड़ताल करा दी। इस प्रसिद्ध यूरोपियन स्कूल में घटित होने वाली यह प्रथम दुस्साहसिक घटना थी जिसने समस्त गोरी चमड़ी वालों में भय का वातावरण बना दिया।

विद्यालय के अधिकारियों ने सुभाष को विद्यालय से निकाल दिया। पिता श्री जानकीनाथ बोस को जब घटनाक्रम का पता चला तब उन्होंने सुभाष से कहा—यह तुमने क्या किया है? तुमने अपने भविष्य का नाश कर दिया है। सुभाष ने उत्तर दिया—पिताजी, ओटंग ने सभी भारतीयों का अपमान किया है। हम भारतीयों को मूर्ख, नालायक, काला कुत्ता और बदमाश कहा है। मैं भारतीयों का अपमान सहन नहीं कर सकता। जहाँ तक मेरे भविष्य की बात है मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपके नाम को उज्ज्वल करूँगा। पिता की इच्छानुसार आई.सी.एस. की परीक्षा की परन्तु अपनी राष्ट्रीय भावना के अनुकूल आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण करके भी सरकारी नौकरी स्वीकार न करके देश के लिए अपने जीवन को आहुत कर दिया।

भिखारिन की सहायता करना-एक दिन सुभाष की माता प्रभावती ने सुभाष के कमरे में प्रवेश किया। क्या देखती है कि कुछ चींटियां सुभाष की पुस्तकों की आलमारी में प्रवेश कर रही हैं। माता जी ने आलमारी खोली, दो रोटियां एक कागज में लिपटी हैं, उन रोटियों को खाने के लिए चींटियां आ रही हैं। इतनी देर में सुभाष ने अपने कमरे में प्रवेश किया। माँ ने पूछा—यह रोटियाँ किसलिए रख रखी हैं? सुभाष ने कहा—माँ, इन रोटियों को अब बाहर फेंक दो। माँ ने पूछा-सुभाष, क्या बात है? इन रोटियों को देखकर दु:खी क्यों हो रहा है? सुभाष ने उत्तर दिया—माँ, अपने खाने से बचाकर दो रोटियाँ मैं प्रतिदिन एक भिखारिन को देता था। आज वह मिली नहीं थी, इसलिए मैंने यह रोटियाँ इसी आशा में आलमारी में रख दी थी कि थोड़ी देर के पश्चात् यह रोटियाँ दे आऊँगा। परन्तु अभी-अभी मैं इस भिखारिन को देखने गया था तो पता चला कि बेचारी का स्वर्गवास हो गया है। अपनी बात समाप्त कर सुभाष इस प्रकार दु:खी हो गये मानो भिखारिन न होकर कोई आत्मीय की मृत्यु हो गई हो। सुभाष ने सहज भाव से कहा—माँ, हमें निर्धनों की सहायता करनी चाहिए। यह उन पर कोई एहसान नहीं है, हमारा कर्त्तव्य है। माँ ने सुभाष को गले से लगाते हुए कहा—सुभाष, इतनी संवेदनायें कहाँ से लाते हो? यह पूरे संसार का दु:ख तुम कहाँ समेटे रहते हो? यह कहकर माँ-पुत्र दोनों गले लग गये। माँ इसलिए हैरान थी कि इतना छोटा-सा बच्चा और इतनी बड़ी-बड़ी बातें और सुभाष इसलिए रो रहा था कि मेरे भारत में कितनी निर्धनता है, मैं इसे कब समाप्त करूँगा? ऐसी ही घटना महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन में भी आती है। एक दिन ऋषि दयानन्द सायंकाल के समय ध्यान में बैठे थे। बाहर जल में बहाने के लिए एक माँ अपने पुत्र के शव को तैयार खड़ी थी। ऋषि दयानन्द जी ने देखा कि उस बच्चे के शव से कफन को इसलिए अलग कर रही थी कि वह अपने तन को ढक सके। ऐसी निर्धनता देखकर ऋषि दयानन्द का हृदय तड़प उठा और कहा—हे प्रभु! इस देश की एक माँ अपने पुत्र के शव को कफन तक भी उपलब्ध नहीं करा सकती। इस देश की निर्धनता का मूल कारण यह आततायी अंग्रेज ही हैं। यही बात सुभाष के मन-मस्तिष्क पर भी छा गई और सुभाष ने इन अंग्रेजों को इस देश से खदेड़ने के लिए संकल्प कर लिया।

जाजपुर में हैजे का प्रकोप-समाचार-पत्र में एक समाचार छपा-जाजपुर में हैजे का भीषण प्रकोप। नीचे हैजे के होने वाली क्षति का वर्णन पढ़कर सुभाष की आँखें फटी की फटी-सी रह गई। सुभाष पर उस दु:खद समाचार की गहरी प्रतिक्रिया हुई। बस इन पीड़ित रोगियों की सेवा करने का संकल्प कर लिया। वह यह

क्रमश: पृष्ठ 4 पर.....

www.thearyasamaj.org

स्वतन्त्रता के महान् योद्धा.... पृष्ठ 3 का शेष....

भी नहीं जानते थे कि उसे पिता हृदय तथा विचारों से महान् होते हुए भी अपने जीवन स्तर के सम्बन्ध में अत्यन्त सजग हैं। वे कभी नहीं चाहेंगे कि उनका बेटा इन रोगियों के बीच जाकर उनकी सहायता करे। प्रत्येक व्यक्ति के अपने-अपने कर्म होते हैं, भावनाएँ और संवेदनाएँ भी अलग-अलग होती हैं। अपनी भावनाओं, संवेदनाओं, स्वभाव को प्रमुखता देते हुए भूख-प्यास की चिन्ता किए बिना जाजपुर के हैजा पीड़ितों की सेवा में जुट गया। उसकी सादगी, विनम्रता, निष्ठा, लगन और सेवा तत्परता को देखकर किसी को अनुमान भी न हो सका कि वह कटक के सम्मानित सरकारी वकील रायबहादुर श्री जानकीनाथ का पुत्र होगा। जब लोगों को ज्ञात हुआ तो वे विस्मित रह गये।

सुभाष लौटा, पिता को प्रणाम किया। पिता से अत्यन्त विनम्र भाव से कहा—पिताजी, क्षमा कीजियेगा। मैं आपका आदेश लिए बिना जाजपुर अपनी भावनाओं के वशीभूत होकर सेवाकार्य के लिए चला गया। पिता ने कहा—क्षमा का तो प्रश्न ही नहीं उठता परन्तु जो तुमने किया है वह सर्वथा मेरी प्रतिष्ठा के विरुद्ध है। क्या एक तुम्हारी ही सेवा की आवश्यकता थी? यदि तुम्हारा यही रंग-ढंग रहा तो तुम अपना भविष्य अन्धकारमय बना लोगे। इतनी देर में समाचार मिला कि सुभाष ने मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की है। सुभाष ने हँसते हुए कहा—अच्छा हुआ कि किसी अंग्रेजी कालेज में पढ़ने के स्थान पर किसी भारतीय कॉलेज में पढ़ने का अवसर प्राप्त होगा।

कलकत्ता के रास्तों का अंग्रेजी नाम बदलकर भारतीय ना रखे-20 जुलाई 1921 को सुभाष बाबू की मुलाकात महात्मा गांधी से हुई। उन्होंने उनकी मुलाकात कलकत्ता के मेयर दास बसु से कराई। दास बाबू सुभाष के विचारों से इतने प्रभावित हो गये कि उन्होंने सुभाष को कार्यकारी अधिकारी के रूप में नियुक्त कर लिया। सुभाष बाबू तो अंग्रेजों से चिढ़े हुए थे उन्होंने जितने भी कलकत्ता में अंग्रेजों के नाम से रास्ते थे, लगभग उन सबके भारतीय नाम रख दिये और अंग्रेजी नाम हटा दिये।

चितरंजन दास जी को अपना राजनैतिक गुरु बनाया-बंगाल के वरिष्ठ नेता देशबन्धु श्री चितरंजनदास जी ने अपनी लाखों रुपयों की वकालत को ठोकर मार दी। उनके इस त्याग से प्रभावित होकर, उनमें श्रद्धाभाव रखते हुए उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानना स्वीकार कर लिया। त्यागी गुरु का शिष्य भी त्यागी होना चाहिए। यह बात सुभाष ने सिद्ध कर दी।

आई.सी.एस की नौकरी छोड़ दी-एक धनी परिवार में जन्म लेने के बावजूद सुभाष का सांसारिक धन-वैभव, पदवी की ओर झुकाव नहीं था। मित्रगण उसे संन्यासी कहते थे। अंग्रेज सरकार की दमनकारी एवं अन्यायपूर्ण नीति के विरोध में आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण करके भी सरकारी नौकरी छोड़ दी। स्वयं ब्रिटिश सरकार के भारत मन्त्री के समझाने के बावजूद भी कलेक्टर और कमिश्नर बनने की बजाय मातृभूमि का सेवक बनना स्वीकार किया।

बंगाल की भयंकर बाढ़-बंगाल की भयंकर बाढ़ में फंसे लोगों की भरपूर सहायता की। सामाजिक कार्य निरन्तर चलते रहे। इसके लिए युवक दल की स्थापना की ताकि कृषक समाज की सहायता की जा सके।

यतीन्द्रनाथ की शवयात्रा में भारतीयों में जोश भरा-क्रान्तिकारी यतीन्द्रनाथ ने जेल में 63 दिनों की भूख हड़ताल इसलिए की कि वहाँ क्रान्तिकारियों के साथ बहुत ही दुर्व्यवहार किया जाता था। वहीं उनका निधन हो गया। उनकी शवयात्रा सरकार के विरोध के बावजूद निकाली। अंग्रेजों के विरुद्ध जितना जोशीला भाषण दे सकते थे, दिया। अंग्रेज सरकार ने उन्हें पुन: गिरफ्तार कर लिया।

ब्लैक हाल स्मारक को हटाना-अंग्रेजों ने भारतीयों को अपमानित करने के लिए एक ब्लैक हाल स्मारक बनवाया। सुभाष इसे देश व भारतीयों का अपमान समझते थे। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध समझौता विरोधी कांफ्रेंस का आयोजन किया। चाहे अंग्रेज सरकार ने उन्हें पुन: गिरफ्तार कर लिया परन्तु सुभाष के प्रभाव से भयभीत होकर ब्लैक हाल स्मारक को हटा दिया गया।

गान्धी जी से मतभेद-रवीन्द्रनाथ टैगोर, प्रफुल्लचन्द्र राय, मेघनाथ साहा जैसे वैज्ञानिक भी सुभाष की कार्यशैली से सहमत थे परन्तु गांधी जी उनकी कार्यशैली को पसन्द नहीं करते थे। चाहे गांधी जी के सहयोग से 1931 में वे कांग्रेस के अध्यक्ष बने। गांधी जी उन्हें अपनी शैली के अनुसार चलाना चाहते थे परन्तु वन का यह सिंह पिंजरे में कैसे बन्द रह सकता था? उन्होंने कांग्रेस पार्टी ही छोड़ दी क्योंकि गांधी जी की नीति अंग्रेजों को सहयोग करके स्वराज्य पाने की थी जबकि सुभाष यह जानते थे कि ये अंग्रेज स्वार्थी, विश्वासघाती एवं अन्यायी लोग हैं, यह शान्ति से हमें आजादी नहीं देंगे। इसके लिए सशस्त्र क्रान्ति करनी होगी। गान्धी जी से मतभेद हो गये और उनसे अलग हो गये।

पं० मोतीलाल नेहरू एवं जवाहरलाल नेहरू से सम्बन्ध-सुभाष जी की कार्यनिष्ठा, नायकत्व, देशप्रेम, लगन व उच्च चरित्र की प्रशंसा करते हुए पं० मोतीलाल नेहरू ने गद्‌गद् कंठ से कहा था—सुभाषचन्द्र बोस मुझे अपने लड़के की तरह प्यारे हैं। परन्तु इस देश का दुर्भाग्य है कि जिस सुभाष को जवाहरलाल नेहरू का पिता अपने लड़के के समान मानता है वहां पं० मोतीलाल नेहरू का पुत्र जवाहरलाल नेहरू सुभाषचन्द्र बोस के जीवन से सम्बन्धित फाइलों को गुम करा देता है।

सफलता के लिए ईश्वर का सहारा-दक्षिण पूर्व एशिया के भारतीयों ने सिंगापुर में एक ऐतिहासिक सम्मेलन किया। उस सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सुभाष ने कहा था—भारत की स्वाधीनता आन्दोलन का नेता चुनकर आपने जो सम्मान प्रदान किया है उसके लिए मैं आपका अपनी अन्तरात्मा से धन्यवाद करता हूँ कि परमात्मा मुझे अपना कर्त्तव्य पूर्ण करने की शक्ति प्रदान करे, जिससे मैं अपने देशवासियों और प्रवासी भारतीयों को पूर्ण सन्तुष्ट कर सकूँ।

सैनिकों के लिए आदेश-सिंगापुर में आजाद हिंद फौज के सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा—भारत की स्वाधीन सेना के सिपाहियो! आज मैं अपार गौरव तथा अद्‌भुत आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ कि भारत की स्वाधीन सेना का निर्माण हो गया है। यह फौज भारत को ही स्वतंत्र नहीं करेगी वरन् स्वाधीन भारत की भावी सेना का निर्माण भी करेगी। सैनिक होने के नाते आपको सदा तीन आदर्श अपने सामने रखने चाहिएं। 1. विश्वासपात्रता, 2. कर्त्तव्य, 3. बलिदान। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं सदैव आपके साथ रहूँगा। इस समय मैं आपको भूख, प्यास और संघर्ष के सिवाय कुछ नहीं दे सकता। यह कोई नहीं जानता कि देश को स्वतन्त्र कराने के लिए हम में से कौन जीवित बचेगा? परन्तु इतना निश्चित है कि हमारा संघर्ष रंग लायेगा। हमारा देश स्वतन्त्र होगा परन्तु इसके लिए हमें सर्वात्मना समर्पित होना होगा।

स्वतन्त्रता का सेवक-सिंगापुर में जापान के जनरल तोजो उपस्थित थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा—मुझे विश्वास है कि सुभाषचन्द्र बोस स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति होंगे। जापान को भारत पर किसी राष्ट्रपति को लादने का अधिकार तो नहीं है, परन्तु हम इस महामानव को इस योग्य समझते हैं। सुभाष बोस ने जनरल तोजो की इस बात का खण्डन करते हुए कहा था—स्वतन्त्र भारत की जनता जिसे चाहेगी उसे अपना प्रथम राष्ट्रपति चुन लेगी। मैं तो स्वतंत्रता का सेवक मात्र हूँ।

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा-जापान के सहयोग से आजाद हिंद फौज की स्थापना की। हिटलर सेमिले। जर्मनी में 'भारतीय स्वतंत्रता संगठन' तथा 'आजाद हिंद रेडियो' की स्थापना की। जर्मनी से जापान पहुँचकर युवाओं का आह्वान करते हुए यह नारा दिया—'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' 'जय हिन्द' का नारा भी सुभाष की देन थी।

सबको आकर्षित करने की कला-सुभाष जी केवल मेधावी छात्र रहे हों, अथवा उसमें केवल देशभक्ति ही रही हो, ऐसी बात नहीं थी वरन् वह अनेक गुणों का साकार प्रतीक था। उसका चरित्र उस हीरे की भांति था जो किसी भी अग्निपरीक्षा में धूमिल नहीं पड़ता था। उसके आचरण में ऐसी गम्भीरता और संतुलन था जिससे कोई भी व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। उसकी आकृति में ऐसा ओज तथा दृढ़ता थी कि लोगों को पल भर में आकर्षित कर लेती थी।

आजाद हिंद फौज का गीत-

कदम-कदम बढ़ाये जो, खुशी के गीत गाये जा।
ये जिन्दगी है कौम की, तू कौम पर लुटाये जा।
चलो दिल्ली पुकार के, कौमी निशां सम्भाल के।
लालकिले पै गाड़ के, फहराये जा फहराये जा।

यह वह गीत था जिसे सैनिक झूमते-झूमते गाते हुए राष्ट्र की वेदी पर बलिदान हो जाते थे। किन्तु आह! भारतीयों का दुर्भाग्य! देश का दुर्भाग्य! 23 अगस्त 1945 को टोकियो रेडियो के निम्न समाचार ने भारतीयों पर वज्रपात कर दिया और पूरा विश्व स्तब्ध रह गया।

क्रमश: पृष्ठ 6 पर.....

www.thearyasamaj.org

जिला वेदप्रचार मण्डल हिसार की बैठक सम्पन्न

हिसार। वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार की महत्त्वपूर्ण बैठक महात्मा आनन्द स्वामी सभागार दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में 6.1.2017 को प्रधान श्री रामकुमार आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मास्टर रामपाल आर्य, मन्त्री आचार्य योगेन्द्र आर्य, विशेष आमन्त्रित प्रतिष्ठित अन्तरंग सदस्य वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही एवं अन्तरंग सदस्य कृष्णकुमार कापड़ो आदि ने भाग लिया। सभाप्रधान व सभामन्त्री का नवनिर्वाचित होने पर पुष्प-मालाओं द्वारा जोश-खरोश के साथ सम्मान किया गया। उन्होंने 28 जनवरी 2017 को आचार्य बलदेव स्मृति दिवस समारोह में दयानन्दमठ रोहतक में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पधारने का अनुरोध किया।

मंच का संचालन स्नेही जी ने किया। मण्डल के बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने विद्वानों का स्वागत किया और वेदप्रचार की गति को बढ़ाने का अनुरोध किया। इस बैठक में प्रधान श्री रामकुमार आर्य, ब्र० दीपकुमार आर्य उपप्रधान, मण्डल के मंत्री कर्नल ओमप्रकाश एडवोकेट आदि ने अपने विचार रखे और समारोह में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचने का आश्वासन दिया।

बैठक में सूबेदार हरिसिंह आर्य, महावीर फौजी सिरसाना, मा० दिलबाग आर्य उमरा, शमशेर नम्बरदार लाडवा, शोभाचन्द व नत्थूसिंह आर्य गुरुकुल धीरणवास, सत्यपाल मित्तल हिसार, महेन्द्रसिंह आर्य आर्यनगर, राजेन्द्र पूर्व एस.एच.ओ. हिसार, फूलसिंह आर्य व सुरेश आर्य मोरछी, प्रताप आर्य बालसमन्द, गोसेवा दल की जिला प्रधान रघुवीर पूनिया, सीताराम सिंगला, लाडवा गोशाला के आनन्दराय, खेमसिंह व विजयपाल हांसी आदि उपस्थित थे।

इसके पश्चात सभा प्रधान रामपाल आर्य, मंत्री योगेन्द्र आर्य, अत्तरसिंह स्नेही जिला फतेहाबाद की ओर रवाना हो गए। आर्यसमाज सुन्दरनगर में आर्यों की बैठक ली। प्रधान बंसीलाल आर्य ने 28 फरवरी को रोहतक सम्मेलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आश्वासन दिया। उसके बाद आर्यसमाज मन्दिर सिरसा में पहुंचकर बैठक को संबोधित किया। इस अवसर पर जगदीश सींवर सभा अन्तरंग सदस्य, प्रसिद्ध समाजसेवी डॉ. आर.एस. सांगवान, मा० संतलाल शर्मा, गोसेवक खुबीराम ने सभाअधिकारियों का पुष्प-मालाओं से सम्मान किया और रोहतक सम्मेलन में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचने का आश्वासन दिया। आर्यसमाज के मंत्री भीष्मपितामह शास्त्री ने जलपान की उत्तम व्यवस्था की।

-वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, नलवा (हिसार)

मकर-संक्रान्ति पर्व सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा गुरुग्राम एवं आर्यसमाज माडल टाउन गुरुग्राम के सयुक्त तत्वावधान में मनाये जारहे मकर सक्रांति पर्व पर श्री लक्ष्मण पाहुजा प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा की अध्यक्षता में ता. 15.01.2017 रविवार को कन्हैया लाल आर्य उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने हरियाणा सरकार से पुरजोर शब्दों में मांग की कि ग्राम हर नौल नजदीक मांडीखेड़ा मेवात में बनने जा रहे बूचड़खाने कत्लखाने को तुरन्त बन्द करने के आदेश दिये जाये। श्री अशोक शर्मा मन्त्री आर्य समाज माडल टाउन गुरुग्राम ने उपस्थित जनता से हाथ उठाकर सर्व सम्मति से प्रस्ताव पास कराया तथा जनता को विश्वास में लेकर सरकार से पुरजोर शाब्दों में चेतावनी देते हुए कहा कि अगर सरकार ना मानी तो जन आन्दोलन चलाकर जेल भरनें से भी पीछे नही हटेंगे, आर्य वेद प्रचार मंडल मेवात के प्रधान पदम चन्द आर्य ने कहा कि कत्लखाना खुलने से गोहत्या भी बढ़ जायेगी, मेवात में पहले ही गौहत्या बड़े पैमाने पर हो रही है। इस अवसर पर आचार्य वीरेन्द्र विक्रमजी ने मकर सक्रांति पर्व के महत्व पर प्रकाश डाला एवं वर्तमान भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की प्रशंसा करते हुए कहा कि बहुत दिनों के बाद देश को कुशल प्रसाशक एवं लोहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की तरह से श्री नरेन्द्र मोदी जी मिले हैं जिन्होंने भारतवर्ष का सम्मान सारी दुनिया में बढ़ाया हैं। इस अवसर पर प्रभुदयाल चुटानी महामंत्री, ईश्वर सिंह दहिया प्रधान आर्य समाज पटेल नगर, पी.एन. मौगिया, एन.डी. कालडा न्यू कालोनी, नरेन्द्र तनेजा, रामवीर शास्त्री, नरवीर चौधरी प्रधान सैक्टर 4-7, सुरेन्द्र बजाज आदि सैकडों लोगों ने बूचड़खाने को रोकने के लिये अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर श्री कन्हैयालाल जी आर्य को अनेक सामाजिक कार्य करने के लिए सम्मानित किया गया।

लक्ष्य निर्धारित कर मेहनत करें विद्यार्थी

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के वार्षिक उत्सव में हुई अनेक मनमोहक प्रस्तुतियां

सिरसा (12 जनवरी 2017)। विद्यार्थी जीवन में प्रत्येक बच्चे को अपने सुनहरी भविष्य के लिए लक्ष्य को निर्धारित कर मेहनत करनी चाहिए। लक्ष्य निर्धारित किए जाने पर ही जीवन सफल हो पाएगा अन्यथा विद्यार्थी अपने पूरे जीवनकाल में बिना लक्ष्य के भटकता रहेगा और कभी सफल नहीं हो पाएगा। यह बात एसडीएम

परमजीत चहल ने आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के वार्षिक उत्सव में मुख्यातिथि के तौर पर अपने संबोधन में कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा मन्त्री आचार्य योगेन्द्र आर्य ने की, जबकि विशिष्ट अतिथि के तौर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की कोषाध्यक्ष सुमित्रा आर्या, प्रस्तोता सर्वमित्र आर्य तथा अत्तरसिंह स्नेही उपस्थित हुए। इस दौरान सभी उपस्थित अतिथियों ने हिन्दू संस्कृति की रक्षा व इसके प्रचार व प्रसार के लिए की जाने वाले कार्यों की जानकारी दी तथा युवाओं को भी आर्य प्रतिनिधि सभा से जुड़कर हिन्दू संस्कृति को आत्मसात् करने और अपने सभी परिचितों को भी इससे अवगत करवाते हुए उन्हें हिन्दू संस्कृति की रक्षा करने का आह्वान किया। इस दौरान स्कूल के विद्यार्थियों ने देशभक्ति व हिन्दू संस्कृति पर आधारित अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिनकी सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की। प्राचार्य उम्मेदसिंह ढाका ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की और शिक्षा, खेल व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की उपलब्धियों की सभी को जानकारी दी।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने समूहगान, वंदे मातरम् पर नृत्य, राजस्थानी व हरियाणवी डांस, पंजाबी गिद्दा, भंगड़ा आदि प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में स्कूल प्रबंधन समिति के अध्यक्ष डॉ. आर.एस. सांगवान, संरक्षक कुलवंत राय जिंदल, उपाध्यक्ष डॉ. कालूसिंह, प्रबंधक मा. राजकुमार वर्मा, उपप्रबन्धक भूपसिंह गहलोत, सुरेन्द्र सिंह वैदवाला होशियारीलाल शर्मा, डॉ. कर्णसिंह, लालचंद गोदारा, पूर्व प्राचार्य कृष्णलाल वोहरा, रणजीत मोंगा, काशीराम बेनीवाल, रायसिंह सहारण, गंगाधर वर्मा, सुभाष शर्मा, सुरेन्द्र आर्य, जगदीश सींवर, सतनारायण गोयल, कुलदीप आर्य, पूर्ण गिरधर, राजेंद्र कड़वासरा, सावित्री सांगवान, कृष्णा फोगाट, जगदेव फोगाट आदि उपस्थित थे।

मकर संक्रान्ति महोत्सव सम्पन्न

ऋषिकुल गोशाला नीमड़ीवाली (भिवानी) में 14.1.2015 को मकरसंक्रान्ति महोत्सव मनाया गया। प्रात:काल यज्ञ किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वैद्य स्वामी दयानन्द गिरि ने की। मुख्यातिथि श्री धर्मवीर सांसद (भिवानी) थे जिन्होंने गोशाला को 5,00,000 रु० दिये। उन्होंने गौ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। अमित शास्त्री (दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार) ने मकर संक्रान्ति पर्व पर सारगर्भित विचार रखे। प्रो. भूपसिंह आदि ने भी अपने विचार रखे। पं. रामनिवास आर्य व ज्ञानेश्वर तेवतिया के शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रौद्योगिकी कॉलेज के छात्रों ने नाटक व व्यायाम प्रस्तुत किये। उन्होंने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ पर प्रेरणादायी कार्यक्रम भी रखे। सुनीति आर्या ने प्रेरणादायी भजन रखे। मंच का संचालन शेरसिंह आर्य (एम.ए.) ने किया। मंच पर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, उमेद शर्मा (उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), सत्यपाल आर्य, वेदप्रकाश आर्य, विमलेश आर्य, मोहनलाल शर्मा, सुभाष आर्य, नरेश शर्मा आदि उपस्थित थे। लोगों ने दिल खोलकर गोशाला में दान दिया।

-प्रो. सत्यपाल आर्य गोसेवक (भिवानी)

www.thearyasamaj.org

उनका जीवन बोलता था, सिखाता था

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

दिनांक 16.01.2017 को मैं श्री ईश्वर आर्य कालवा (जीन्द) के पिताजी के देहान्त पर संवेदना व्यक्त करने कालवा जा रहा था। जब मैं रोहतक से मोरवी पहुँचा तो अचानक आचार्य जी की याद आ गई। उनके आदेश से अनेक कार्यक्रमों में गोशला धड़ौली व गुरुकुल कालवा में जाने का अवसर मिला था। इससे यह क्षेत्र परिचित हो गया। यह सब याद करके एक वेदनायुक्त घुटन कुछ पल के लिए छा गई। आचार्य बलदेव जी से जुड़े कुछ संस्मरण ताजा हो जाए।

आचार्य जी प्राय: कहते थे कि व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए कि स्वयंजीवन बोले। स्वयं उनका जीवन बोलता था, सिखाता था। उनके साथ रहने से जीवन संबंधी अनेक पहेलियां सुलझ गईं। **'सत्य ने भूमि को धारण कर रखा है'** उनके साथ रहने से ही हमें इसका मर्म समझ में आया। परमात्मा तो सत्यस्वरूप है ही, साथ ही उसकी सृष्टि में रहने वाले आचार्य बलदेव जी जैसे तपस्वी लोग भी इसे सुव्यवस्थित करके इस उक्ति को चरितार्थ करते हैं।

हमने सुना था **'ताश घर का नाश'**, इस उक्ति का औचित्य आचार्य जी के साथ रहने से ही हमें पता चला। हम आचार्य जी के साथ गांव-गांव प्रचार पर जाते थे। प्रचार के स्थान पर उन्हें बिठाकर लोगों को एकत्रित करने जाते थे। उस समय ताश खेलते हुए लोगों से हम आचार्य बलदेव के आने का समाचार सुनाकर प्रचार स्थल पर चलने का आग्रह करते थे। उस समय कुछ लोग ताश से उठते ही नहीं थे। ऐसे साधु के विचार सुनते तो घर सुधार, सन्तान निर्माण के विचार प्राप्त करते। लेकिन ताश का व्यसन ऐसा है कि न निर्माण की बात सुनने दे और न ही निर्माण के लिए बालकों के लिए समय निकालने देवे।

संगठन के लिए वे बड़ा उपदेश देते थे। एक बार उन्होंने कहा कि जब तक यह सोचकर कार्य करोगे कि मेरे लिए (=आचार्य बलदेव के लिए) कार्य कर रहे हो, लम्बा नहीं चल पाओगे। जब यह सोचकर कार्य करोगे कि अपनी आत्मिक उन्नति के लिए कर रहे हैं तो संगठन में लम्बे चल पाओगे। उनकी यह सीख कितनी व्यावहारिक है, बुद्धिजीवी समझ सकते हैं।

28 जनवरी को **'आचार्य बलदेव स्मृति दिवस'** में भारी संख्या में श्रद्धापूर्वक पहुंचें। दूसरे पर यदि पहाड़ जैसा उपकार किया हो उसे चींटी के समान तथा दूसरे द्वारा चींटी से उपकार को पहाड़ समान समझना चाहिए। अपनी गलतियों को दूसरे पर न मढें तथा स्वयं के दोषों को दूसरे में खोजने का प्रयास न करें। ऐसे महापुरुषों का जीवन यही सीख देता है।

स्वतन्त्रता के महान् योद्धा.... पृष्ठ 4 का शेष....

आजाद हिंद की अस्थायी सरकार के सर्वोच्च अधिकारी श्री सुभाषचन्द्र बोस कर्नल हबीर्बुरहमान के साथ बैकांक से टोकियो आ रहे थे....फारमोसा के निकट ताइहोक् नामक स्थान पर उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। उसमें आग लग जाने के कारण नेताजी मृत्यु को प्राप्त हुए।

इस समाचार को सुनकर सम्पूर्ण भारतीय एवं प्रवासी भारतीय शोकमग्न हो गये। अंग्रेज भी चकित रह गये। उनको भी इस समाचार पर पूर्ण विश्वास नहीं हो रहा था। वे यह समझ रहे थे कि यह समाचार केवल हम अंग्रेजों को भ्रमित करने के लिए दिया गया है। उनकी मृत्यु एक रहस्य बनकर रह गई। यदि वह सचमुच भारत की आजादी के बाद आ गये होते तो इस देश का इतिहास कुछ और ही होता। यदि वे देश राष्ट्रपति और सरदार पटेल देश के प्रधानमन्त्री बनते तो आज भारत विश्व का सिरमौर राष्ट्र होता परन्तु सभी आशायें धूमिल हो गई। सुभाष जी का कुछ पता न चला। उनकी मृत्यु पर पर्दा ही पड़ा रह गया। आजादी के महान् योद्धा के जीवन का अन्तिम भाग रहस्यमय ही बन गया।

अब इतना समय बीत गया है कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की कहीं जीवित रहना असम्भव है फिर भी कभी भारत का इतिहास निष्पक्ष ढंग से लिखा गया तो श्री सुभाषचन्द्र बोस जी का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। उनका अन्तिम समय कैसा भी क्यों न रहा हो वह भारत के महान् सपूत थे और यह देश युगों-युगों तक उनको नमन करता रहेगा। स्वाधीनता के पुजारी, भारत माता की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले त्याग और बलिदान की इस मूर्ति को शत-शत नमन।

संपर्क-म०नं० 4/45, शिवाजी नगर, गुड़गाँव मो० 09911197073

डॉ. आर.एस. सांगवान को मिला आजीवन उपलब्धि पुरस्कार

सिरसा (3 दिसम्बर 2017)। सिरसा के वयोवृद्ध चिकित्सक व समाजसेवी डॉ. आर.एस. सांगवान को पंचकूला में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में 'वरिष्ठ नागरिक राज्य सम्मान' से सम्मानित किया गया। डॉ. आर.एस. सांगवान को यह सम्मान हरयाणा के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री कृष्ण बेदी ने प्रदान किया।

इस सम्मान में स्मृतिचिह्न के अतिरिक्त डॉ. सांगवान को 30 हजार रुपये का एक चैक भी प्रदान किया गया। डॉ. सांगवान को 87 वर्ष की आयु में सक्रिय रूप से वरिष्ठ नागरिकों के अतिरिक्त शिक्षा एवं समाजसेवा में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि उन्होंने गत पांच नवम्बर को सिरसा के कस्तूरबा गांधी वृद्धाश्रम में निर्माणाधीन डॉ. आर.एस. सांगवान ब्लॉक के निर्माण के लिए 21 लाख रुपये की राशि देने की घोषणा की थी। जिसमें से 16 लाख रुपये पहले ही कस्तूरबा गांधी वृद्धाश्रम के निर्माण के लिए दे चुके हैं। डॉ. सांगवान सिरसा की 20 संस्थाओं से पिछले 50 वर्षों से जुड़े हुए हैं। विशेषरूप से आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, आर्यसमाज, सिरसा एजुकेशन सोसायटी, आईएमए व कस्तूरबा गांधी वृद्धाश्रम प्रमुख हैं।

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

www.thearyasamaj.org

नेताजी जयन्ती पर आर्यसमाज व राजनैतिक नेताओं को अपना आत्मनिरीक्षण करना चाहिए

आपका जन्म 23 जनवरी 2017 को कटक में श्री जानकीदास वसु के घर हुआ। आपकी माता जी का नाम श्रीमती प्रभावती देवी था। इनके पिताजी सरकारी वकील थे। उनको रायबहादुर की उपाधि भी मिली हुई थी। इनकी माता जी भी धर्मपरायणा एवं बहादुर महिला थी। सुभाष जी की वीरता व देशभक्ति के संस्कार उनकी माता जी से ही मिले थे। सुभाष जी स्कूल से ही अंग्रेजों द्वारा भारतीय बच्चों से पक्षपात के व्यवहार बेहद दु:खी थे। पढ़ाई में बहुत होशियार थे, सादा जीवन उच्च विचार के पोषक तथा सदाचारी युवक थे। कटक के अन्दर स्वामी विवेकानन्द जी का स्वाभिमान से जीने व मानवता की सेवा करने बारे सारगर्भित विचार सुनकर काफी प्रभावित हुये। अंग्रेजी स्कूल में छठी कक्षा में पढ़ते समय प्रा. उटेन ने सुभाष को ब्लैक मंकी (काला बन्दर) कहने पर उसके मुंह पर सुभाष ने थप्पड़ जड़ दिया। इनको दो वर्ष के लिए कॉलेज से निकाल दिया गया। इनके पिताजी बहुत दु:खी हुए। दो वर्ष बाद आशुतोष के प्रभाव से इनको स्काटिश चर्च कॉलेज में प्रवेश मिल गया। वहां पर सुभाष ने बड़ी लग्न व मेहनत से सैनिक शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

बी.ए. के बाद सुभाष आन्दोलन में विशेष रुचि लेने लगे। इनके पिता जी अभी इनको संघर्ष से दूर रखना चाहते थे। इनके पिता जी ने बड़े प्रयास से इस शर्त पर कि मैं अंग्रेजों की नौकरी नहीं करूँगा, आई.सी.एस. पास करने के लिए इंग्लैण्ड भेजा। सुभाष ने चौथे स्थान पर आई.सी.एस. पास की उसके बाद इण्डिया ऑफिस में जाकर अधिकारी विलियम ड्यूक को अपना त्यागपत्र (डिग्री) सौंप दिया। उनके बार-बार कहने पर भी साफ कह दिया कि मुझे नौकरी नहीं करनी। वापिस कलकत्ता आकर सुभाष ने देशबन्धु चितरंजनदास की अपील पढ़ी कि देश के युवा देश को आजाद कराने के लिए आगे आयें। सुभाष देशबन्धु के नेतृत्व में आ पहुंचे, युवकों को संगठित करने की योग्यता सुभाष में थी ही। स्वराज्य पार्टी के माध्यम से सुभाष ने रचनात्मक कार्य किया। 25 अक्तूबर 1924 को एक षड्यन्त्र कर सुभाष को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। अलीपुर जेल से बहरामपुर मण्डले जेल भेज दिया गया जहां सचमुच नरक था। वहां सुभाष जी बीमार हो गये। वहां से रंगून भेज दिया गया। बाद में सरकार ने मजबूर होकर सुभाष को रिहा कर दिया। उन्हीं सुभाष को कलकत्ता का मेयर चुन लिया गया। बढिया कार्य करने पर कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव में पट्टाभि सीतारमैया को हराकर अध्यक्ष चुने गए। उस समय दु:खी होकर गांधी ने कहा कि यह पट्टाभि की हार नहीं मेरी हार है। सुभाष ने तुरन्त अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देदिया। सुभाष जी अब तक 11 बार जेल यात्रा कर चुके थे।

देश को आजाद कराने के लिए मंगल पाण्डे से लेकर महात्मा गांधी के बलिदान तक असंख्य वीर बलिदानियों ने जेल काटी, फांसी के फंदे चूमे, अनेक प्रकार के कष्ट सहन किये या यूं कहिये कि सन् 1857 से लेकर 1947 तक 90 वर्षों से अनेक वीरों ने कुर्बानी दी जिससे हमारा देश आजाद हुआ। देश की आजादी में काम आने वाले सभी गरमदल व नरमदल वाले सच्चे देशभक्त एवं क्रान्तिकारी पूजनीय व अनुकरणीय हैं। यथासामर्थ्य देश की आजादी के संघर्ष में अपनी पारी खेल गए। लेकिन सुभाषचन्द्र बोस की देश की आजादी में विशेष भूमिका रही। उनका धैर्य, हिम्मत, त्याग, बलिदान तथा दूर देश में जाकर आजाद हिंद फौज गठन करना उनके ही बस की बात थी। उनका यह नारा गर्व से सिर ऊँचा कर देता है कि 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'। मैं आज युवकों की प्रेरणा के लिये उनके जन्मदिवस पर नेताजी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाल रहा हूँ ताकि आज के नवयुवको को प्रेरणा मिले।

20 जून 1943 को सुभाष टोकियो पहुंचे वहां प्रधानमंत्री जनरल तोजो का पूर्ण सहयोग मिला। 2 जुलाई को नेताजी जापान से सिंगापुर पहुंच गये। उपरोक्त देशों में हजारों लोगों को तैयार कर चुके थे। श्री रासबिहारी बोस 4 जुलाई को आयोजित एक समारोह में नेताजी को आजाद हिंद फौज के सेनापति की बागडोर सौंप दी। नेताजी ने सम्मेलन में घोषणा की कि शीघ्र ही स्वतन्त्र भारत की स्थायी सरकार की स्थापना की जाएगी जिसके अधीन आजाद हिंद फौज भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ेगी। नेताजी के आह्वान पर पूर्वी एशिया के द्वीपों में बसे भारतीयों की संख्या 50 हजार तक आजाद हिंद फौज में सम्मिलित हो गये। 25 अक्तूबर 1943 को नेताजी ने घोषणा की कि आजाद हिंद की अस्थायी सरकार ब्रिटेन व अमेरिका के खिलाफ युद्ध की घोषणा करती है। नेताजी ने कहा कि दिल्ली चलो, 'तुम खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।' लोगों में उत्साह की लहर दौड़ गई। नेताजी की अपील पर नर-नारियों ने रुपये तथा सोना-चांदी की गहनों की ढेर लगा दिये। नेताजी ने आजाद हिंद फौज के सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मेरे पास आप लोगों को देने के लिए भूख, प्यास, कठिनाई और मृत्यु के सिवाय कुछ नहीं है। मैं आपको आजादी अवश्य दिला दूंगा।

6 नवम्बर 1943 को अण्डेमान में जीत हुई। जापान सरकार ने नेताजी की उपस्थिति में आजाद हिंद सरकार को सौंप दिया। 4 फरवरी 1944 को अराकोन्टा मोर्चे पर आजाद हिंद फौज तथा ब्रिटिश सेना में भयंकर युद्ध हुआ जिसमें आजाद हिंद फौज की जीत हुई। 18 मार्च कोआजाद हिंद फौज ने सीमा पारकर भारत सीमा में प्रवेश किया। 21 नवम्बर 1944 को नेताजी ने जापान छोड़ दिया। जर्मनी व इटली की हार हुई। अमेरिका ने जापान के दो महानगरों हीरोशिमा-नागासाकी पर अणुबम्ब गिरा दिया। जापान व आजाद हिंद फौज को उल्टा हटना पड़ा। 22 अगस्त 1945 को फोरमोसर में विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई।

—वानप्रस्थ श्री अत्तरसिंह स्नेही, नलवा, जिला हिसार 9466865351

साप्ताहिक सत्संग सम्पन्न

आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय (हिसार) की ओर से 8.1.2017 को साप्ताहिक सत्संग का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा अमित शास्त्री थे। मन्त्रपाठ छात्रों ने किया। 10 बजे सभा की अध्यक्षता महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने की। वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने वैदिक त्रैतवाद (ईश्वर, जीव, प्रकृति) पर सरल शब्दों में सारगर्भित विचार रखे। श्री राजपाल आर्य व श्री चिरंजीलाल ने ईश्वर भक्ति के भजन गाए। 33 छात्रों के अतिरिक्त श्री अजय एलाहाबादी एडवोकेट, राजू आर्य, दीपक आर्य आदि उपस्थित थे। शान्तिपाठ के बाद ऋषिलंगर में भोजन किया गया।

-प्रमोद लाम्बा, मंत्री

शोक-समाचार

दिनांक 26 दिसम्बर 2016 को श्री नफेसिंह खरब गांव गुमाणा निवास जो वर्तमान में रोहतक रह रहे थे का 86 वर्ष की आयु में कुछ समय से अस्वस्थ रहने से आकस्मिक मृत्यु हो गई जिसका समाचार सुनकर सभी परिजनों, परिचित जनों, और भलेराम आर्य (सांघी निवासी) के परिजनों को बड़ा दु:ख हुआ। स्व० नफेसिंह खरब का परिवार उनके पूर्वजों के सद्विचारों से अतिथि सत्कार, सामाजिक और धार्मिक कार्यों से जाना जाता है। स्व० नफेसिंह खरब ने अपने सेवाकाल (छोटूराम पॉलिटेकनिक रोहतक) में बहुत से छात्रों को उनकी गलतियों को सुधार कर अच्छा मार्गदर्शन दिया जिसके कारण उन्होंने अपने परिश्रम से सफलता पाकर अच्छी तरह से अपने विभागों में अच्छी सेवा की। स्व० नफेसिंह खरब की मेहनत और लगन से दोनों भाइयों का परिवार रोहतक शहर में रहकर अपनी अगली पीढ़ी का शिक्षा के माध्यम से भविष्य का निर्माण कर रहे हैं और यह परिवार सभी तरह से साधन सम्पन्न है। इस परिवार में कई गुण हैं, किसी की निन्दा न करना, किसी से झगड़ा न करना और समाजसेवा करना। ऐसे परिवार से सामाजिक व्यक्ति की मृत्यु से परिवार के साथ-साथ समाज को भी बड़ा दु:ख होता है।

मेरी परिजनों से विनती है कि ऐसे व्यक्ति की स्मृति में किसी धार्मिक स्थान या किसी विद्यालय में त्रिवेणी (बड़, पीपल, नीम) लगाई जाये ताकि उनकी याद बनी रहे तथा प्रदूषण मुक्त जलवायु बना रहे।

हम सब की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और स्व० नफेसिंह जी खरब की मृत्यु के पश्चात् परिवार और परिचितजनों को जो दु:ख हुआ है उसे सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

-भलेराम आर्य, ग्राम-सांघी, जिला रोहतक

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज के महान् संत आचार्य बलदेव जी महाराज

आचार्य बलदेव जी महाराज आर्यसमाज के संतों में एक ऐसे संत थे, जिन्होंने अपनी त्याग-तपस्या एवं परिश्रम से आर्यसमाज के तस्वीर एवं तकदीर को बदल डाला। आचार्य जी ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए आर्यसमाज के उत्थानार्थ एक प्रहरी के रूप में कार्य किया। उनका जीवन अत्यन्त पवित्र था। वे दयानन्द के सच्चे सिपाही थे। उन्होंने जीवन भर स्वामी दयानन्द के सपनों को साकार करने में लगे रहे। वे वेदों, दर्शनों, उपनिषदों एवं व्याकरण के मूर्धन्य विद्वान् थे। उन्होंने आजीवन बाल ब्रह्मचारी रहकर आर्यसमाज को उच्च शिखर तक पहुंचाने का प्रयास किया। ऐसे महान् त्यागी, तपस्वी, कर्मठ एवं कर्मयोगी संत बलदेव जी महाराज को मैं शत-शत नमन करता हूँ।

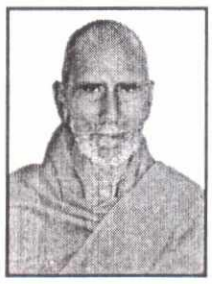

आचार्य बलदेव जी का जन्म 19 जनवरी 1931 (माघ प्रतिपदा 1987 विक्रम संवत्) को हरयाणा प्रान्त के सोनीपत जिले के सरगथल नामक गांव में हुआ। उनके पिता का नाम गूगनसिंह था। आचार्य जी का सम्पूर्ण जीवन त्यागमय था। उनकी बाल्यकाल की शिक्षा घर पर हुई और बाद में उन्होंने जाट कॉलेज रोहतक से एफ.एस.सी. तक की शिक्षा प्राप्त की। तदुपरान्त स्वामी दयानन्द की लिखी हुई पुस्तक सत्यार्थप्रकाश के पढ़ने से उनके मन में एक जिज्ञासा उठी कि हमें भी अपने जीवन को वैदिक धर्म के अनुरूप ढालना चाहिये और बाद में उन्होंने ऐसा ही किया। सन् 1962-1987 तक स्वामी ओमानन्द गुरुकुल झज्जर के सान्निध्य में रहकर अष्टाध्यायी, प्राचीन व्याकरण, महाभाष्य, दर्शनों एवं वेदों का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन किया। आचार्य बलदेव जी 1987 से 2000 तक गुरुकुल कालवा में रहकर श्रद्धा एवं निष्ठापूर्वक कार्य एवं अध्यापन करते हुये अनेक ब्रह्मचारियों को वेद, दर्शन एवं व्याकरण का विद्वान् बनाया। उनमें से आचार्य स्वदेश जी, जो मथुरा में रहकर एक गुरुकुल के साथ-साथ गुरुकुल वृन्दावन विश्वविद्यालय का भी संचालन कर रहे हैं। आचार्य महीपाल जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, आचार्य अर्जुनदेव वर्णी, आचार्य ऋषिपाल जी, जो सम्प्रति आचार्य ऋषिपाल जी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद का संचालन कर रहे हैं। स्वामी रामदेव जी को आज कौन नहीं जानता है। अर्थात् समस्त संसार जानता है। ये सभी आचार्यगण आचार्य बलदेव जी के ही शिष्य हैं।

आचार्य जी अत्यन्त सादगी प्रवृत्ति के संत थे उनका सम्पूर्ण जीवन त्यागमय था। उन्होंने अपने जीवन में कभी भी दिखावा नहीं किया। जैसा वे कहते थे वैसा करते भी थे। मनसा वाचा कर्मणा उनका एक था। उनका जीवन वेदानुकूल था। वे स्वामी दयानन्द की तरह ही अपना सम्पूर्ण परिवार, गृह, जमीन आदि त्यागकर अपने जीवन को आर्यसमाज की रक्षार्थ लगा दिया।

आचार्य जी गोभक्त थे। उन्होंने गौओं की रक्षा पर विशेष बल दिया। उनकी रक्षार्थ उन्होंने गोरक्षा आन्दोलन भी चलाया। उनकी बहादुरी एवं निर्भीकता को देखकर सरकार को भी झुकना पड़ा। वे सबसे कहा करते थे कि जो मनुष्य गौओं की रक्षा नहीं करता है उसे संसार में जीने और रहने का अधिकार नहीं है। गोमाता हमारी संस्कृति की पहचान है। शास्त्रों में वर्णित है कि जो व्यक्ति गौओं की रक्षा नहीं करते हैं और अपने स्वार्थसिद्धि के लिए गौओं की हत्या कर उनके मांस से अपनी भूख मिटाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को शीशे की गोलियों से उड़ा देना चाहिये अर्थात् मार देना चाहिए। उनका सम्पूर्ण जीवन वेदानुकूल था। वे प्रात: चार बजे उठकर पहले ईश का ध्यान करते थे। तदुपरान्त दैनिक दिनचर्या से निवृत्त होने के पश्चात् स्नानादि कर सन्ध्या-हवनादि करते थे। लगभग प्रतिदिन सुबह-शाम दो-दो घण्टे तक घूमते भी थे। लेखक लिखता है—

आचार्य बलदेव जी वेदों के विद्वान् थे।
त्यागी-तपस्वी एक सच्चे इन्सान थे॥
ज्ञान की गंगा जग में बहाई।
वेदों की ज्योति हृदय में जलाई।
जगह-जगह पर गोशालायें खुलवाये।
अपने शिष्यों को वैदिक विद्वान् बनाये।
आचार्य बलदेव जी आर्यों की शान थे।
त्यागी-तपस्वी एक सच्चे इन्सान थे॥
दयानन्द के पथ पर चलकर सोये को जगाया।
भटके बिछुड़ों को गले से लगाया।
श्री बलदेव के एहसानों को कभी न भूलेंगे।
उनके पथ पर ही आगे भी चलते रहेंगे।
आचार्य बलदेव जी आर्यों के सम्मान थे।
त्यागी-तपस्वी एक सच्चे इन्सान थे॥

आचार्य जी ने अपने जीवन में कभी हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने वैदिक धर्म एवं स्वसंस्कृति की रक्षार्थ अपने को मिटा दिया। ऐसे महापुरुष का जन्म भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व की धरती पर कभी-कभी हुआ करता है। वे सबसे कहते थे कि जो मनुष्य अपना कल्याण चाहता है, वह वेदों के अनुरूप अपने जीवन को ढालें, तभी मनुष्य को उसके जीवन में सुख प्राप्त हो सकता है। वैदिक ज्ञान ही एक ऐसा ज्ञान है जिसे अपनाने से मनुष्य अपने जीवन में शान्ति का अनुभव कर सकता है। आचार्य जी का कथन था कि सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है। मानव जीवन व शरीर पाकर उसे अपने जीवन में ऐसा कोई अनुचित कार्य नहीं करना चाहिए जिससे समाज, राष्ट्र एवं किसी पशु-पक्षी को नुकसान हो सके। इससे स्पष्ट होता है कि वे दयालु भी थे। आचार्य जी ने बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है, जो मनुष्य वेदों के पथ पर चलता है, उसका कल्याण हो जाता है। जो मनुष्य वेदविरुद्ध आचरण करता है, उसका जीवन पशुतुल्य माना जाता है।

आचार्य जी ने मूर्तिपूजा को वेदविरुद्ध बताया। उन्होंने कहा कि मूर्तिपूजा के ध्यान से मनुष्य मोक्ष को प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि मूर्ति में आत्मा नहीं है। परमात्मा की प्राप्ति आत्मा द्वारा ही संभव है। परमात्मा सर्वत्र विद्यमान है। लेकिन मनुष्य अपनी आत्मा द्वारा ही परमेश्वर के गुणों के बारे में जान सकता है। किसी कवि ने परमेश्वर के बारे में लिखा है—

मेंहदी की पत्तियों में लाली है नजर आती नहीं।
है हवा आकाश में पर वह दिखलाती नहीं॥
जिस तरह अग्नि का शोभा संग में मौजूद है।
उस तरह कण-कण में परमात्मा मौजूद है॥

आचार्य जी एक सच्चे ईश्वरभक्त थे। वे अत्यन्त निर्भीक थे। वे सत्य के लिये हमेशा अडिग रहते थे। वे सत्य की रक्षार्थ हमेशा मरमिटने को तैयार रहते थे। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध आवाज उठाने वाले सतलोक आश्रम रोहतक के कबीरपंथी रामपालदास के विरुद्ध संघर्ष किया। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रसेवा, आर्यसमाज की सेवा, धर्मसेवा, गोसेवा एवं परोपकार में लगा दिया। अन्त में दिनांक 28 जनवरी 2016 ई० को दयानन्दमठ रोहतक में लगभग 6 बजे सुबह अकस्मात् उनका देहावसान हो गया।

आचार्य बलदेव जी के जीवन से हम आर्यों को प्रेरणा लेना चाहिये कि हमें भी वैसा ही बनने का प्रयास करना चाहिए। आचार्य जी ने आर्यसमाज के लिए जो कार्य किया उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

-डॉ० रवीन्द्र कुमार शास्त्री 'सोम'
एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी, शिक्षाशास्त्र)
पी-एच.डी. साहित्य-व्याकरणाचार्य,
आयुर्वेदरत्न, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
फरीदाबाद 9953131084

जिला हिसार में वेदप्रचार जोरों पर

दिनांक 13.1.2017 को जिला हिसार के चिड़ौद गांव में शकुन्तला पायल अध्यापिका के आग्रह पर 10+2 विद्यालय में प्रात:काल यज्ञ किया गया और आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने माता-पिता व गुरु ये तीन गुरु बताए। ये तीन गुरु धार्मिक होने चाहिएं तभी सन्तान का निर्माण होगा। वानप्रस्थ श्री अत्तरसिंह स्नेही ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र व कार्यों पर प्रकाश डाला। दिनांक 13.1.2017 को स्त्री आर्यसमाज डोगरान मोहल्ला (हिसार) में लोहड़ी के पावन पर्व पर वेदकथा का आयोजन किया गया। डॉ. प्रमोद योगार्थी इस यज्ञ के ब्रह्मा थे। विद्यालय के छात्रों ने मंत्रपाठ किया। चार प्रतिष्ठित यजमान दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। सभा की अध्यक्षता स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास हिसार ने की। मुख्य अतिथि नेपालसिंह वर्मा थे। घनश्याम प्रेमी व राजवीर आर्य (मुजफ्फर नगर) ने शिक्षाप्रद भजनों को प्रस्तुत किया।

मंच पर आचार्य रामस्वरूप शास्त्री, लालदेव शास्त्री, सूर्यदेव वेदांशु, चौ. हरिसिंह सैनी, महात्मा अत्तरसिंह स्नेही उपस्थित थे। मंच का संचालन डॉ. प्रमोद योगार्थी ने किया। आर्यसमाज की प्रधाना शन्नोदेवी ठकराल ने सभी का धन्यवाद किया। आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में 15.1.2017 को साप्ताहिक सत्संग हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा अमित शास्त्री थे। विद्यालय के छात्रों ने मन्त्रपाठ किया। सभा की अध्यक्षता वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने किया। मुख्य वक्ता डॉ. प्रमोद योगार्थी जी थे। उन्होंने मकर संक्रान्ति की वैज्ञानिक स्वरूप व सुखी गृहस्थ के बारे में उपदेश दिया। स्नेही जी ने इतिहास का उदाहरण देकर शराब से होने वाली बर्बादी का चित्रण खींचा। चिरंजीलाल व आर.एस. चुघ के ईश्वर भक्ति के भजन हुए। दिनांक 15.1.2017 को सर्वोदय भवन (हिसार) के साप्ताहिक सत्संग में सायं 5 बजे एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी जी ने योग के आठ अंग पर सारगर्भित प्रवचन रखा। इस अवसर पर वानप्रस्थ श्री अत्तरसिंह स्नेही, श्री धर्मवीर शर्मा, श्री अजय शास्त्री, श्री सत्यप्रकाश मित्तल, श्री रामकुमार आर्य (अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल हिसार) आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **आचार्य योगेन्द्र आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।